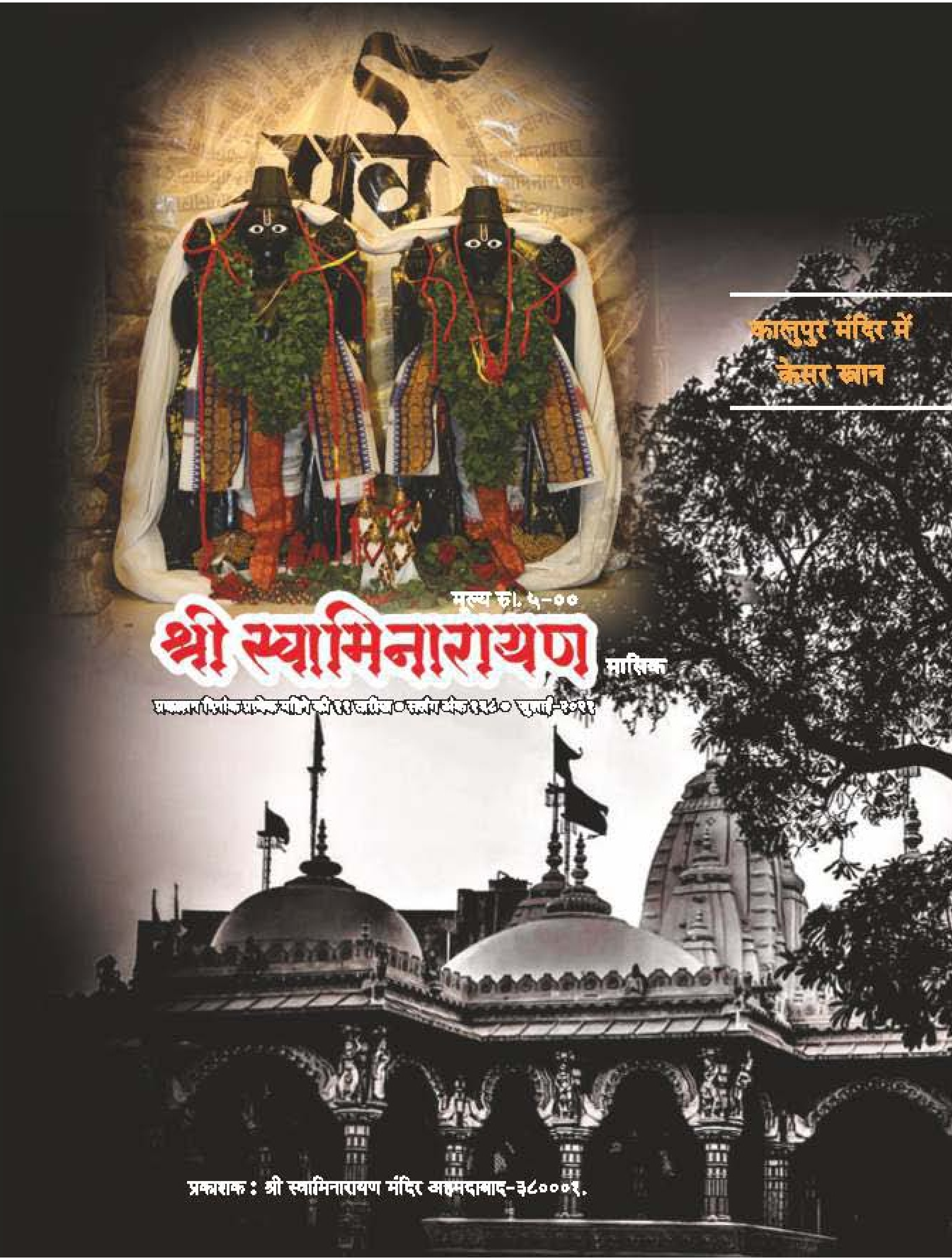

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन तिथि प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १४८ • जुलाई-२०१२

कालुपुर मंदिर में
केसर स्नान

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में केसर स्नान के समय ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट ।

एसपीक मार्वल कालुपुर मंदिर में दर्शन के लिये आये । उस समय प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ खुशी के पल में ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, मेदप के पाटोत्सव अवसर पर सत्संग सभा ।

मनु गाँव में कोविड सेन्टर और कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा करते हुए माननीय मंत्रीजी भूपेन्द्रसिंह चुडासमा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवा में पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण बाग में सफाई तथा अन्य सेवा करते हुए हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ ● अंक : १६८ ● जुलाई-२०२१

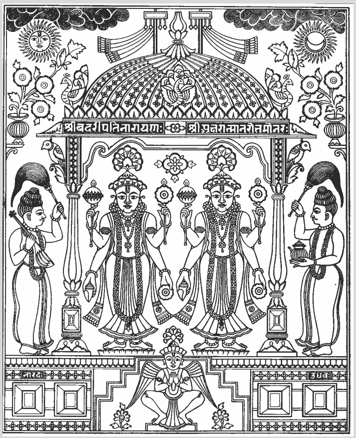

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. श्री नरनारायण भगवान के प्रथम पूजारी ०६

०४. विहार ०८

०५. सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्री नरनारायण १२

०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १५

०७. भक्ति सुधा १६

०८. सत्संग समाचार १८

अस्मदीयम्

संसार के अच्छे संचालन के लिये परमेश्वर के द्वारा निर्धारित मर्यादा में रहकर मनुष्य सभी कार्य करता है । वहाँ तक उसमें भगवान का वास होता है । जब मानव मर्यादा का उल्लंधन करता है । तो उसमें दानव का वास हो जाता है । दानवी प्रवृत्ति मानव को स्वयं तथा अन्य जीव-जन्तुओ को केवल दुःख प्रदान करता है । जो मानव संस्कृति के विपरीत है । और जिसमें मानवता होती है । वह सभी को प्रत्येक तरीके से सुख देता है । तथा अच्छा व्यवहार आचरण रखता है । वह मानवीय संस्कृति कही जाती है । इसमें प्रत्येक प्रकार के मर्यादा का पालन किया जाता है । इन्ही मर्यादाओ के उल्लंधन से मानव प्रकृति बदलती है । प्रकृति बदली वही संस्कृति में विकृति आ जाती है । विकृति का ही नाम दानवता है । यही दानवता समाज में या स्वयं को कभी भी सुख-शांति नही आने देती है । जिस प्रकार जल का स्वभाव शांत और शीतल है । लेकिन उसमें एक चूने के पत्थर का टुकडा डालने पर उफान आ जाता है । उसी तरह विकृत मनुष्य के विचारो में उफान आता है । वह जल शीतलता का त्याग करके गर्म हो जाता है । मनुष्य में चूना की जगह पर अहंकार प्रवेस करता है । तो मनुष्य की अवस्था इसी तरह की हो जाती है । अहंकारी व्यक्ति विवेक और मर्यादा को एक तरफ करके अच्छे लोगो के साथ दानवी आचरण वाला व्यवहार करने लगता है । भले वह रावण ही क्यो न हो उसे दानव माना जाता है । इस सावधानी पूर्वक इस प्रकार की प्रवृत्ति कभी भी अपने जीवन में नही लाये । इस लिये हमेशा भगवान श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते रहे । यही परम एकान्तिक भक्ति है ।

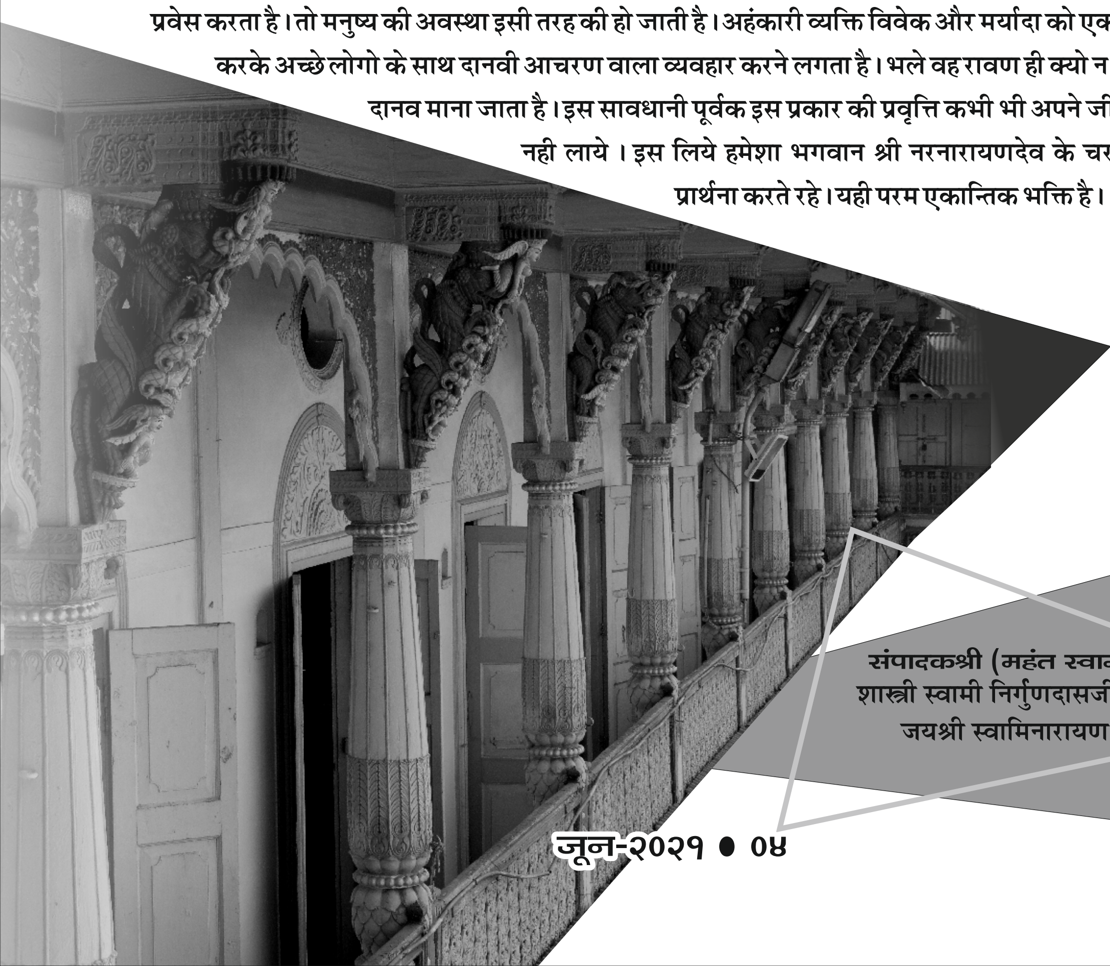

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

जून 25

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को
केशर स्नान अपने करकमलो द्वारा सम्पन्न करते हुए।

पर्व

श्री नरनारायण भगवानना प्रथम पूजारी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

उद्धव के अवतार सद्‌गुरु श्री रामानंद स्वामी दंढाव्य प्रदेश उत्तर गुजरात में सत्संग विचरण करते हुए । मेऊ गाँव में गये । वहां पर अनेक मुमुक्षुओ ने सत्संग करवाये थे । वहाँ पर कुछ दिन विराम भी किये थे । वहाँ पर बेचरभाई पंचोली नाम के पवित्र ब्राह्मण स्वामी के अनन्य भक्त थे । उन्होने रामानंद स्वामी से प्रार्थना की हे स्वामी ! कल आप हमारे घर भोजन करने अवश्य आये । भूदेव का पवित्र भाव देखकर स्वामीने आमंत्रण स्वीकार कर लिया । दूसरे दिन रामानंद स्वामी बेचर पंचोली के घर शिष्यो के साथ भोजन करने गये । भक्त के शुद्ध भाव से बनाये गये भोजन को स्वामीजी और शिष्योने प्रेम से ग्रहण किया । तत्पश्चात आसन पर गद्दा तकिया लगाकर उस पर बैठाकर पूजा, चरण, प्रक्षालन, आरती स्तुति करके दण्डवत प्रणाम किये । उसी समय उद्धव के अवतार सद्‌गुरु रामानंद स्वामी अति प्रसन्न मुद्रा में अमृत भरी दृष्टि से भक्त की तरफ देखकर बोले ''आप के घर 'सनंदन' नाम से सनकादि अवतार धारण करेगा ।'' आजीवन ब्रह्मचारी रहकर भगवान की सेवा करेगा . और सम्प्रदाय के प्रथण मंदिर श्री नरनाराय भगवान का प्रथण पूजारी बनेगा । ऐसा आशीर्वाद सुनकर बेचर पंचोली तथा उनकी पत्नी दोनो अति खुश हुए । रामानंद स्वामी कुछ दिन के बाद मेऊ गाँव से बिदाई लेकर लाघणज गाँव में आये थे ।

गुरु रामानंद स्वामी के कृपा बचन से अच्छे दिन आने का समय आ गया था । विक्रम संवत १८५४ माघ सुद पंचमी के दिन बेचर पंचोली के घर साक्षात सनंदन नाम के ब्रह्माजी के मानस पुत्र ने जन्म लिया । माता-पिता अपने पुत्र में स्वयंभु सद्‌गुणो को देखकर खुश हो गये । और उनका नाम दलसुख रख दिये । मेऊ गाँव के लोग तथा रिश्तेदार उनको देखकर कहने लगे कि कोई दैवीय आत्मा ने जन्म धारण किया है । इस तरह की चर्चा लोग करने लगे । आठवे वर्ष में वेदोक्त विधि से यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण कर दिया गया । उसी समय आजीवन ब्रह्मचर्य पालन का दृढ संकल्प के लिये ।

बेचर पंचोलीने बारह वर्ष के दलसुख को विद्याभ्यास के लिये । उनके मामा के गाँव मछियाँव भेज दिये । दलसुखराम और मूलजी का मामा-भानजे का सम्बन्ध था । छोटे से दलसुख मछियाव में रहकर विद्याभ्यास करने लगे ।

एकबार श्री स्वामिनारायण भगवान मछियाँव आये थे । उस समय दलसुख पंचोली गाँव के मैदान में बच्चो के साथ खेल रहे थे । श्रीजी महाराज ने दलसुख का नाम लेकर बुलाये । नाम सुनकर दलसुख तुरंत महाराज के पास आकर चरण स्पर्श किये । दलसुखने कहा कि बुआ से रोटी तथा रंगा बुआ से मक्खन रोटी लाने के लिये बोल दूँ । यह सुनकर दलसुख तुरंत बुआ

और रंगा बुआ के घर जाकर महाराज को खिलाने के लिये ले आये । महाराज तालाब के किनारे पंगत करके संतो को भोजन करवाये । उसी समय दलसुख के उपर श्रीजी महाराज अधिक खुश होकर सिर पर हाथ रखकर बोले, अपने मामा की तरह हमारी सेवा करना ।

बाल मानस में श्रीजी महाराज के ये शब्द बारम्बार स्मृति करने लगे । एकबार श्रीहरि मछियाँव में आये । तब माता-पिता से आदेश लेकर दलसुख श्रीहरि के सेवा में साथ चल दिये । काफी समय के बाद श्रीजी महाराजने नैष्ठिक ब्रह्मचारी को दीक्षा देकर आनंदानंदवर्णी नाम रखे थे । मामा मूलजी ब्रह्मचारी के साथ महाराज की सेवा में अखंड रहने लगे । एक बार श्रीजी महाराज ने कहा यह वर्णी अति छोटा है । लेकिन रामानंद स्वामी के वचनानुसार सनंदन नाम से सनकादि के अवतार को धारण करके आये है।

संवत १८७८ के वर्ष में श्री स्वामिनारायण भगवानने सर्वप्रथम सम्प्रदाय का प्रथम मंदिर कालुपुर अहमदाबाद को अपने अधीन रखकर नरनारायण भगवान की स्थापना किये । तब महाराजने विचार किये कि प्रथम मंदिर है । और शहर बड़ा है । तथा नरनारायण भगवान नैष्ठिक व्रत वाले है । यदि ब्रह्मचारी सेवा में रहे तो अच्छा रहेगा । यह सोचकर आनंदानंद वर्णी 'बडे' ने श्रीनरनारायण भगवान का सर्व प्रथम मंदिर के पूजा हेतु त्यागी ब्रह्मचारी को रखे थे । उस समय महाराज खडे होकर आनंदानंदवर्णी के गले में अपना हार पहनाये थे । और बोले कि हम इस मंदिर में श्री नरनारायणदेव में अखंड विराजमान रहूँगा । आप इसके पश्चात नरनारायण के स्वरुप की हमारे जैसे भाव रखकर सेवा करियेगा । हम अब हमेशा आपकी सेवा मूर्ति में रहकर अंगीकार करेगे ।

इसके बाद सभा की तरफ देखकर श्रीहरि बोले, ये आनंदावर्णी तो अपने मामा मूलजी ब्रह्मचारी जैसे अति पवित्र भोले, श्रद्धावाले, प्रमादरहित, निष्कपट, धर्म, ज्ञान, वैराग्य सहित भक्ति वाले है । हमे पवित्र भक्त के हाथ की सेवा अच्छी लगती है । उसी प्रकार श्री नरनारायण भगवान भी यही भाग है । आनंदानंदवर्णी के पवित्र भाव से श्री नरनारायण भगवान प्रत्यक्ष भोजन करते थे । वर्णी को महाराज का वियोग नही हो । इसलिये श्रीजी महाराज मूर्तियो में रहकर सेवा स्वीकार करते थे । ऐसा सदैव रसोइया पूछ-पूछकर भोजन बनाता था । तथा शहर के हरिभक्तो को स्वप्न में प्रेरणा देते थे। ऐसा प्रत्यक्ष भाव श्रीहरिने इस सत्संग में किये थे । वह आज भी कई भक्त अनुभव करते है । आनंदानंदवर्णी रात्रि की शयन आरती और अपने मंदिर में दो धंटे तक रहते थे । तब दूसरे त्यागी, गृहस्थो को शंका होती थी कि ठाकुरजी के शयन के बाद भी वर्णी अंदर क्यो बैठे रहते है ? तो एक दूसरे वर्णी अन्दर देखने गये । तो आनंदनंदवर्णी श्री नरनारायण भगवान की मूर्ति के चरणो को दबाते थे । तब सभी लोगो को ज्ञात हुआ । यह वर्णी तो महारजा जो कहे है । मूलीज ब्रह्मचारी जैसा ही है । महाराज के सामने थाली रखखर छोटे-छोटे भोजन के ग्रास मुख में रखते थे । वर्णी प्रतिदिन थाली रसोई नित्यकर्म बिना भगवान के सामने बैठकर माला फेरते । ऐसे साक्षात् हाजिर रहते थे । मध्यान और शयन के बाद प्रतिदिन फूलहार तैयार करते थे । चंदन घिसते थे । तुलसी पत्र लाते थे । इन्ही सब सेवाओ में व्यस्त रहते थए । दिन में निद्रा वर्जित थी । रात्रि मे वह ४ घंटे शयन करते थे । प्रतिदिन १०८ साष्टांग दण्डवत तथा मंदिर की प्रदिक्षणा नित्य करते थे । ऐसे श्रेष्ठ गुरु आनंदानंदवर्णी में था । इस कारण से श्रीजी महाराजने प्रथम मदिर का पूजारी इन्हे नियुक्त किये थे । वर्णीने दंढाव्य देश के मेऊ गाँव का गौरब बढाकर सम्प्रदाय में एक इतिहास रचा है । मेऊ के निवासी बेचर पंचोली के पुत्र रत्न दलसुखराम पंचाली - वर्णी आनंदानंद ब्रह्मचारी के सेवा का दर्शने करने त्यागी, गृही देशदेशांतर तीर्थो से आते थे । ऐसे सनंदन अवतार वर्णीन्द्र आनंदानंदजी के चरणो में कोटी कोटी वंदन करते है।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

विहार

संकलन : प्रफुल खरसाणी

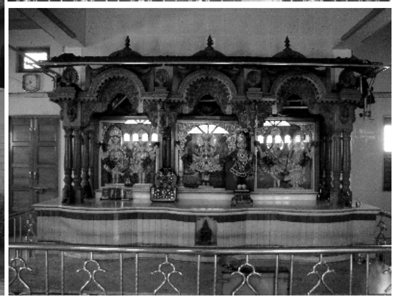

अहमदाबाद से माणसा एस.टी. की बस जाती है। उससे माणसा में उतरकर वहाँ से विसनगर-मेहसाना जाने वाले एस.टी. से विहार जा सकते है। यह गाँव तालुका माणसा, जिला - गांधीनगर में आता है। इस गाँव में स्वामिनारायण धर्म के सिवाय कोई दूसरा धर्म नही है। आर्थिक एवम् सामाजिक रुप से यह एक विसकित गाँव है।

यहाँ का मंदिर दक्षिणावर्ती दरवाजा है। श्री स्वामिनारायण भगवान की सुंदर मूर्ति स्थापित की गई है। मंदिर के दरवाजा के उपर भव्य विशाल टावर है। मंदिर की जगह इसके पूर्व पटेल हिरा चंगावत की थी। उन्होने मंदिर बनाने के लिये कृष्णार्पण किये थे। इस गाँव में सात बार आकर के अनेक लीलाये किये थे। तथा अपने भक्तो के मनोरथ को पूर्ण किये थे। यहाँ पर पोयणा नामक प्रसादी का तालाब है। जहाँ पर श्रीहरिने पाँच सौ परमहंसो के साथ स्नान किये थे। गांव में अभी जो बरगद का वृक्ष है। उसके नीचे छत्री है। वहाँ पर सभा करके उपदेश दिये थे। कुबेरदास पटेल के घर में रसोई करने वाली बरामदा भी मौजूद है। वर्तमान में बाइयो का मंदिर है। वह प्रसादी का है। उस जगह पर हरिभक्तो के आग्रह से श्रीजी महाराज मंदिर बनाने की आज्ञा दिये थे। भगवान स्वामिनारायणने अपने संतो-पार्षदो तथा हरिभक्तो सहित विहार गाँव में बार-बार जाकर लीलाये किये थे। अपना ऐश्वर्य तथा प्रताप सबको दिखाकर विहार गाँव की भूमि को नैमिषारण्य क्षेत्र जैसा पवित्र बना दिये। श्रीहरि विहार आनेपर अपने भक्तो को दर्शन और सुख देते थे। उस समय का वर्णन स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्तचिंतामणी'' ग्रन्थ के ८३ में किये है जो निम्न लिखित है।

पछी वाल्यमो आव्या विहार,
तियां रजनी रह्या मोरार ॥
वाले वेदनो भेद देखाड्य,
हिंसा अहिंसा संशय उखाड्य ॥१७॥
पछी त्यांथी पधारिया श्याम,
आव्या गिरिधर गेरीते गाम ॥

इस प्रकार श्रीहरि माणसा से विहार आकर अज्ञानी मनुष्यो को हिंसा-अहिंसा तथा धर्म अधर्म के बारे में उपदेश दिये। सत्य कल्याण मार्ग को बताये। यह अवसर निष्कुलानंद स्वामीने उपर लिखित ''भक्तचिंतामणी''ग्रन्थ में वर्णन किये है।

अहमदाबाद से विहार
जाने के लिये
सडक मार्ग
१ घंटे ३१ मिनट
एअर पोर्ट से
१ घंटा १५ मिनट

एकबार श्री स्वामिनारायण भगवान अपने संतो-पार्षदो के साथ दंढाव्य देश में विचरण करते-करते संवत १८७५ में विहार गाँव में गये । उस समय कोई सत्संगी नही था । पूरा गाँव शक्ति पंथी था । उस गाँव में ब्राह्मण जाति के जो ब्राह्मण थे । वे भी शक्ति पंथी तथा मंत्र-तंत्र वाले थे । वे उड़ते पक्षीयों को मंत्र बल से नीचे गिरा देते थे । ईस गाँव वालो का पूर्व में कोई सत्कर्म रहा होगा । गाँव के किनारे तालाब के पास बरगद के वृक्ष के पास पाँच सौ परमभक्ति सहित श्रीजी महारजा के आने का समाचार सुनकर गाँव के सभी लोग श्रीजी महाराज को भगवान नही समझकर अपने समूह को लेकर अपने मन में निश्चय कर लिया कि साधु सच्चे भगवान होगे तो हम सभी का नाम से पुकार कर बुलायेगे तो सच्चे ही यदि इस प्रकार नही कर पाते है तो हम सभी उनके उपर मिट्टी, कीचड लगाकर भगा देगे । यह निश्चय करके सभी लोग धूल की गठरी कंधे पर रखकर महाराज जहाँ बैठे थे । वहाँ पर आने लगे । लोगो के नजदीक आने पर श्रीजी महाराज अमृतमयी आँख से देखकर लोगोको उनके नाम से बुलाया । यह देखकर सभी ने अपनी धूल भरी गठरी नीचे रख दी । सभी लोग श्रीजी महाराज के शरण में आकर भूल की माफी तथा नम्र निवेदन करके कहने लगे । हे महाप्रभु सभी के अन्तर्यामी सभी के नियंता सर्वेश्वर प्रभ आप हो है । हम लोग बुद्धिहीन होने के कारण आप के अपराधी है । इस लिये आप हम सब को क्षमा कर दे । इसके बाद सभी को सभा में बैठने को कह दिये । और उपदेश देने लगे । मानव जन्म का क्या कर्तव्य है उसके उपर काफी बात बताये । धर्म-अधर्म के विजय में समझाये । यह सब सुनकर लोग दोनो हाथ जोडकर सभी भक्त जन श्रीजी महाराज से पूछने लगे कि हे महाप्रभु ! हे अधर्मी के उद्धारक हमारे जैसे शक्ति पंथियो का कैसे कल्याण होगा ? हम लोग तो अपनी अज्ञानता के कारण कई पाप किये है । हे भक्त वत्सल प्रभु हम लोगो के उपर दया करे और हम लोगो के पाप का निवारण हो ऐसा बताये । तब श्रीजी महाराजने कहा, कितना भी बड़ा पापी हो यदि वह भगवान के शरण में आकर पाप का प्रायश्चित करता है । उसके उपर भगवान की कृपा हो जाती है । किये गये पापी कर्म जल कर समाप्त हो जाता है । यह सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये । और बोले हे दयालु-महाप्रभु आप हमलोगो जैसे पापियो का उद्धार करे । ऐसी प्रार्थना करने पर परम कृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान पाँच सो परम भक्तो सहित गाते०बजाते पीताम्बरदास त्रवाडी के घर पर पधारे वहाँ पर सभा करके उपदेश दिये । जिसके कारण गाँव के तुलसीदास पटेल तथा कुबेरदास पटेल श्रीहरि के आश्रित बन गये । श्रीजी महाराज तथा पाँच सौ परम भक्तो को भोजन खिलाने के लिये । उन भक्तो ने ब्राह्मणो को बुलाकर भोजन करवाये । यह जानकर श्रीजी महाराजने पीताम्बर त्रवाडी को बुलाकर कहे कि आप

गये । उसी प्रकार से उसमें भोजन पडा था । यह देखकर आश्चर्य में पड गये । और सभी के मन में निश्चय हुआ कि यह काम कोई सामान्य मानव नही कर सकता है । यह कार्य तो भगवान ही कर सकते हे । सभी लोगहाथ जोडकर भगवानने बोले हे विश्वम्भर भगवान अब आप भोजन कर ले । तब श्रीजी महाराज ५०० परमहंसो के साथ भोजन करने बैठे । उस पंगत का दर्शन करने के ग्रामवासी (मुमुक्षु) लोग आये । देवो को दुर्लभ हो ऐसा दर्शन करके कृत कृत्य हुए । बाद में श्रीजी महाराज गेरीता गाँव जाने के लिये तैयार हुए । गाँव के भाविक भक्त श्रीजी महाराज को गाँव की सीमातक छोडने आये थे ।

के गाँव वालो ने हमारे उपर श्रद्धा दिखाई देती है । इस भोजन से पूरे गाँव के लोगो को भोजन कराये । इसके पश्चात हमलोग भोजन ग्रहण करेगे । यह बात सुनकर गाँव के मुखिया लोग सोचने लगे । कि भोजन तो कम लोगो के लिये बनाया गया है । पूरे गाँव की जनसंख्या तो अधिक है । यह सोचना देखकर अन्तर्यामी प्रभु ने कहा भोजन की चिंता करने की आवश्यकता नही है । आप लोग चिंतामुक्त हो कर पूरेगाँव को भोजन करने पर बुलाये । हम लोग अपने तरह से प्रत्येक को भोजन खिलायेगे । आप लोग थोडी भी चिंता नही करे । जिस प्रकार कौरवो की सभा में दुर्योधन ने द्रौपदी का चीर हरण कर रहा था । तब भगवानने नवसोनिन्याबे चीर पूर्ण किये । नरसिंह मेहताकी हुँडी भगवान ने स्वीकार किया था । तथा भक्त की लाज रखे थे । भक्त का कार्य भगवान स्वयं करते है । यह सुनकर सभी लोग खुश हुए । पूरे गाँव को भोजन का आमंत्रण दे आये थे । जब भोजन तैयार हो गया । उसके बाद रसोई की आरती उतारी उसमें लड्डू की परात उपर कपडे ढ़क कर कहे एक तरफ से भोजन ले सभी को श्रीजी महाराजने स्वयं के लिये । इसके बाद सभी लोग भोजन की पंगत में बैठे । उस समय लड्डू की परात श्रीजी महाराज स्वयं लिये और पंगत में परोसने लगे । परोसते - परोसते दक्षिण तरफ आते तब नीम की एक डाल पर बैठते थे । तथा परोसते - परोसते उत्तर की तरफ कुबेरदासके मकान में अनाज पीसने वाली घंटी उसके उपर बैठकर सभी को भोजन कराके तृप्त किये । पूरे गाँव के भोजन करने के बाद गाँव के मुखिया भोजन देखने

एकबार श्रीजी महाराज विहार गाँव में दूसरी बार आये । श्रीहरि हमारे गाँव में आ रहे है । ऐसा समाचार सुनकर गाँव के सभी भक्तलोग श्रीजी महाराज का स्वागत करने आगे गये । और स्वागत करके श्रीजी महाराज को गाते-बजाते गाँव में पिताम्बर त्रवाणी के घर लाये । उसी समय पीताम्बर त्रवाडी का नया घर बन रहा था । उसी समय श्रीजी महाराज दूध पीने की ईच्छआ दर्शावी । पिताम्बर त्रवाडीने कहा हे महाराज अभी भैसे खेत में घास चरने - गई है । जब आयेगी तब मैं आप को दूध प्रदान करुँगा । ऐसा सुनकर श्रीजी महाराज ने कहा आप के आँगन में तो भैस बंधी पडी है । आप झूठ क्यो बोल रहेहै ? तभी त्रवाणी हाथ जोडकर बोले प्रभु वह भैस नही । बल्कि दो वर्ष की पडिया बंधी पडी है । यह सुनकर श्रीजी महाराज बोले आप जाकर अपने हाथ से दूध निकालेगे तो वह अवश्य दूध देगी । यह बात सुनकर विश्वास रखकर अपने बहन जिनका नाम मानबाई था । उनसे बोले कि इस पडिया के आँचल से दूध निकालो । मानबाई पडिया को दुहने बैठी । दो वर्ष की पडिया ने दूध दिया । वह दूध श्रीजी महाराज खुश होकर पीये थे । इस बात की सूचना पूरे गाँव में फैल गयी । सभी लोग आश्चर्य चकित हो गये । और भगवान श्रीहरि का दृढ विश्वास करने लगे । और प्रार्थना क रते हुए बोले आप सदैव हमे सुखी रखे । श्रीजी महाराज द्वारा किये गये भोजन के बर्तन जैसे थाली, कटोरी, प्याला, ताँब की परात वर्तमान समय में त्रावणी परिवार के पास है । वहाँ पर पोयण नामक तालाब भी है । वहां पर श्रीजी महाराज ५०० परमहंसो के साथ स्नान किये थे ।

वराह भगवानकी प्राचीन मूर्ति

वरगद के वृक्ष के नीचे उनकी छत्री भी है। वहाँ पर सभा करके उपदेश दिये थए। पिताम्बर त्रावणी को श्रीजी महाराजने अपने हाथो से भगवान की प्रतिमा दिये थे। कुबेरदास पटेल के घर में भोजन जहाँ बना था। वह बरामदा भी मौजूद है। और उनके बारिशदार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज के शुभाज्ञा से बरामदा कृष्णार्पण कर दिये है।

श्रीजी महाराज जब भी विहार गाँव में आते थे। तब उनका स्वागत करके गाँव में लाया जाता था। एक दिन हरिभक्तो ने प्रार्थना और वंदना करके श्रीजी महाराज से बोले कि आप का प्रतिदिन दर्शन हो ऐसा वरदान हम लोगो को दे। तभी महाराजने कहा कि इस टीले के बगल में एक सुंदर मंदिर बनाये। उसमें हमारी मूर्ति की स्थापना करो। और उन मूर्तियो में मै सदैव निवास करके आप लोगो को दर्शन दूँगा। यह बात सुनकर समाज के सभी लोग खुश हो गये। मंदिर बनाने का दृढ निश्चय कर लिये। और वर्तमान समय में जहाँ बाइयो का मंदिर है। उस जगह पर सर्व प्रथम मंदिर बनाया गया। उसमें आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज अपने हाथो से मूर्ति स्थापित किये। इस प्रकार पूरा गाँव श्री स्वामिनारायण का आश्रित बन गया। गाँव में दूसरे पंथ के लोग आज भी नही है।

श्रीजी महाराज जब भी विहार गाँव में जाते थे। तो सर्व प्रथम पीताम्बर त्रवाडी के घर जाते थे। और प्रसादी की वस्तुए प्रदान करते थे। उस समय में त्रवाडी के घर के उत्तरवाली दिवाल पर जो सिंहासन में मूर्ति है। वह श्रीजी महाराज अपने हाथो से प्रसादी रुप में दिये थे। उस मूर्ति का चमत्कार अलौकिक है। त्रवाडी के वंश में सभी परिवार अच्छे सत्संगी है।

श्रीजी महाराज के उपदेश से पीताम्बर त्रवाडी भी पाँच सौ परमहंसो के साथ श्रीजी महाराज के साथ घोडी के उपर बैठकर घुमते थे। एक दिन श्रीजी महाराजने पीताम्बर त्रवाडी से बोले कि घोडी के उपर कब तक

भ्रमण करेगे। जीव को मुक्ति हो ऐसा करे। ऐसा महाप्रभु के वचन सुनकर तत्काल घोडी को विहार गाँव में छोडकर वे भगवान के साथ रहने लगे। घुमते-धुमते उनावा गाँव में गये। और वहाँ पर उन्होने दीक्षा ले लिया। दीक्षा ग्रहण करके कपिलानंद ब्रह्मचारी नाम से सदा श्रीजी महाराज की सेवा में रहे। और विहार गाँव का नाम उज्जवल किये।

विहार गाँव में एक हीरा चंगावत नाम के पटेल थे। वे श्रीजी महाराज के परम भक्त थे। उनकी श्रीजी महाराज प्रतिदिन दर्शन देते थे। वे खेत में जाकर श्रीजी महाराज से बाते करते थे। गाँव के लोग उनाक मजाक करते थे। कि आप पागल हो गये है? आप अकेले-अकेले किसके साथ बाते करते है। वह बोले कि स्वामिनारायण भगवान प्रत्यक्ष आकर मेरे साथ बात करते है। और बातो का परम सुख देते थे। यह सुनकर सभी लोग आश्चर्य करते थे। वे भक्त अपना सब कुछ भगवान को समर्पित कर दिये थे। अपना घर मंदिर बनाने के लिये दे दिये। वर्तमान में जो बडा सा मंदिर है। वह जगह हीरा चंगावत की थी। इस मंदिर तथा विहार गाँव में कई दर्शनार्थी दर्शन करने आते है।

एक समय विहार गाँव के त्रवाडी अमुलखभाई को महाराज अंत समय लेने आये। वो शरीर त्याग करके महाराज के साथ अक्षरधाम को गये। उनकी बहन मानबाई को ऐसा लगा कि ''ये वासनिक है यह महाराज को छोडकर किसी अन्य जगह पर रह जायेगा।'' ऐसा समझकर समाथिस्थ होकर उसे अक्षरधाम में रखकर पुनः वापस आ गई।

इस प्रकार विहार गाँव में स्वामिनारायण भगवानने अपना अद्भूद ऐश्वर्य-चमत्कार बताकर अनेक लोगो को अक्षरधाम में ले गये। और विहार की भूमि को अपने चरणो से दीप्तवान तथा पवित्र किये।

आप के गाँव का इतिहास भी चित्रो के साथ भेजेगे तो यहाँ पर उसे अवश्य स्थान दिया जायेगा।

सर्वावतारी सर्वोपरी

भगवान श्री नरनारायण

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

जगदन्य तनुस्तथावितुं धरसि त्वं च युगेयुगेऽद्यवै ।
हरिकृष्ण तनुस्त्वयाधृता नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने स्वहस्ते स्थापित श्री नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव, गोपीनाथजी महाराज, श्री राधाकृषणदेव आदि स्वरुपो या मूर्तियो के विष यमें किसी भी प्रकार का भेद न समझे । यह अपने शास्त्रो का स्पष्ट मत है । इसके पश्चात भी श्री नरनारायणदेव का जब भी शास्त्रो में अधिक वर्णन मिले । उस समय कई लोग श्रीहरि के वचन होने के बाद भी मनाते नही है । इतना ही नही हमारी ही उपासना शुद्ध है । और दूसरी की अशुद्ध ऐसा विश्वास रखते है ।

विश्व का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद में विराजमान श्री नरनारायण भगवान के २०० वर्ष पूरे होने जा रहे है । तब आगामी ता. २७-२-२०२२ से ता. ५-३-२०२० तक लगातार भव्य से भव्य 'पर्व' महामहोत्सव मनाया जायेगा । वर्तमान में भी सुंदर कार्यक्रम मनाये जा रहे है । भगवान श्री स्वामिनारायण और भगवान श्री नरनारायण में अणु मात्र अंतर न होने के कारण भगवान श्री नरनारायण भी सर्वावतारी सर्वोपरि और अक्षरधाम के अधइपति भी यही भगवान है । इस प्रकार का जिसका अभिप्राय होगा । उसका आन्तिक कल्याण सुगम होता है ।

सर्वप्रथम सत्संगिभूषण ग्रन्थ का आधार लेते है । यह शास्त्र बदरिकाश्रम में सर्वप्रथम स्वयं नारायण भगानने नरनारायण भगवान के प्रति वहाँ आये दर्शनार्थ नारदजी से कहे थे । नरनारायण दोनो एक ही स्वरुप है । यह भी समझें ।

तमे (नर) वणी नारायणभाई,
कही ये अमे फेर नथी कांई ॥
छो तो एकने दिसो छो दोय,
तेनो भेद जाने जन कोया ॥
(भ.चि.प्र.-५)

हे भक्तो ! अक्षराधिपति सर्वकर्ता, निर्गुण, सभी अवतारो को धारण करने वाले सभी के शाक्षी, सभी के नियामक जो श्रीकृष्ण है, वही कृपानिधि है, भगवान पुरुषोत्तम धर्मदेव और मूर्तिदेवी के द्वारा इस संसार में प्रगट होकर बदरिकाश्रम में कल्याणहेतु (भक्तो के कल्याण के लिये) कल्प पर्यन्त तक तपश्चर्या करते है । इस कारण से भरत खंड की प्रजा के लिये नरनारायण की भजन कल्याणकारी है । (भू.अं.-३, अ.-२८) इसके पश्चात मंदिर (अहमदाबाद) में इस भरतखंड के अधिपति, सभी अवतारो के उत्पत्ति के कारण साक्षात् नरनारायण भगवान की मैं स्थापना करुगा । (भू.अं.-

३, अं.-१४) हे भक्तजनो ! आप सभी लोग एकाग्रचित्त होके मेरे बचन सुने। ये श्री नरनारायण भगवान साक्षात् अपने आराध्यदेव है। सभी अवतारो के कारणभूत है। अक्षरधाम के अधिपति भी है । वसुदेव के घर यही नारायण प्रगट हुए थे। जब राजा पांडू के घर अर्जुन रुप में प्रगट हुए थे। हमारे द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव सदैव हमारे समीप रहते है। उनका वियोग हमसे कभी नही होता है। इस लिये हमने जो-जो मंदिर स्थापित किये है। उसमें श्री नरानरायण भगवान का मंदिर सर्वश्रेष्ठ है। में अपने हृदय में हमेशा पुरुषोत्तम श्री नरनारायण भगवान का स्मरण करता हूँ। यही सर्वोपरि भगवान है। इनका मालिक कोई नही है। मूली मंदिर में राधाकृष्ण भगवान विराजते है। वृत्तालय में लक्ष्मीनारयण है तथा धवलपुर में वृंदावन विहारी महाराज बिराजते है। यही मूर्तियो नरनारायण भगवान की है । श्रीमद् भागवत पुराण में आदि, मध्य और अंत तथा भारत और अन्य पुराण शास्त्रो में महर्षि वेद व्यासमुनिने इस भगवान का वर्णन किये है। वसु और रुद्र रुप में सृष्टि का सर्जक और संहारक यही भगवान है। यही श्री नरनारायण देव ही विष्णु स्वरुप में संसार का रक्षण करते है । ''शास्त्रयोनित्वात'' वेदांत में नरनारायण का गान किया गया है । जो भी मनुष्य अंकाल में स्थापित नरनारायणदेव की मूर्तिका स्मरण करता है । उसे भगवान अवश्य अक्षरधाम में ले जाते है। कलियुग में जब मनुष्य के विवेक बुद्धि का नाश होता है । तब भगवान प्रेरणादेकर उसकी रक्षा करते है । उस प्रकार भक्तो के हित की रक्षा के लिये श्रीनगर (अहमदाबाद) में श्रीनरनारायण भगवान की स्थापना की गयी है । (भू.अं.-४, अ.-४०)

जो भी मनुष्य इस नरनारायण आदि रुपो का प्रतिदिन दर्शन करेगा। वह निश्चित इस संसार से मुक्ति को प्राप्त करेगा। तथा श्रीनगर में श्री नरनारायणदेव का प्रताप प्रतिदिन बढता जायेगा। और भरतखंड के सभी निवासी यहाँ दर्शन करने आयेगे । मैं मूर्तियो में नित्य अखंड स्वरुप में निवास करुगा । तथा सभी बक्तो के मनोरथ को पूर्ण करुगा । (भू.अं.,३, अ.-३४) हे अक्षराधामाी धामपति पुरुषोत्तम नारायण । आप ही धर्मदेव के द्वारा नरनारायण स्वरुप धारण किये है। और दुर्वासा मुनि के शाप के निमितत वर्तमान भरतखंड में धर्मदेव तथा भूपितदेवी के कोख से प्रगट हुए है । हे स्वामिनारायण भगवान । (भू.अं.-५, अ.-१०) (यह स्तुति वचन श्रीहरि और श्री नरनारायणदेव की एकता का दर्शन कराता है।

मैने नरनारायण, लक्ष्मीनारायण, गोपीनाथ इत्यादि मूर्तियो की स्थापना किया है । मैं उसमें साक्षात् निवास करता हूँ। लेकिन नरनारायण में अधिक रहता हूँ। क्योकि मैं दुर्वासा मुनि के श्राप के निमित्त नरनारायण स्वरुप में मैं अक्षरधाम से पृथ्वी पर मनुष्य रुप में प्रगट हुआ हूँ। इस लिये जो मानव नरनारायणकी सेवा करेगा। पूजा करेगा, भेट देगा, मैं नरनारायण रुप में स्वीकार करुँगा । भोजन की थाली से भोजन ग्रहण करुँगा । अपना सुख-दुःख नरनारायण भगवान से कहे। उसमें मैं रहकर आप सभी की सहायता करुँगा । इस लिये आप को कभी शोक नही करना है ।'' (श्रीहरिकृष्ण लीलामृत-३, अ.-११०)

ये भगवान ऐसे है जो अपनी इच्छा से जीवन कल्याण हेतु जन्म लेते है । जन्म लेने के पश्चात वो अजन्मा है। देह त्यागने के बाद भी वे अजर-अमर है। निरंजन है। माया से रहित है। मूर्तिमान है। स्वयं प्रकाशित है। परब्रह्म है। अक्षरातीत है। अन्तर्यामी है। अनंतकोटि ब्रह्मांड के आधार है। मनुष्य देह को धारण करना नट के इन्द्रजाल समान है । अनंतकोटि अक्षरादिक मुक्त के नियंता है। सभी के स्वामी है। श्री पुरुषोत्तम नारायण वे प्रथम धर्मदेव के होकर श्री नरनारायण रुप में प्रगट होकर बदरिकाश्रम में तपस्या करते है । तथा वेही नरनारायण पृथ्वी पर विशेष कार्य के लिये मत्स्य, वाराह, वामन, राम कृष्ण आदि शरीर धारण करके अन्य जीव के अभिमान का त्याग कराते है। श्री नरनारायण

सभी अवतारो के कारण है। श्री नरनारायण के बारे में जो मरण भाव की कल्पना करता है। उसे कई शरीर धारण करना पडता है। उसे चौरासी लाख योनियो में दुःख का अनुभव करना पडता है। श्री नरनारायण के बो अजर-अमर समझत् है। वह कर्म करते लाख चौरासी योनियो से मुक्त हो जाता है।(व.अ.-४)

वही श्रीकृष्ण भगवान स्वयं श्री नरनारायण के रुप में भक्ति यहाँ प्रगट हुए है। इसलिये श्री नरनारायण को हमारा रुप ही समझे तथा आग्रह करके सर्वप्रथम इस नगर में स्थापित किये थे। इस लिये इस श्री नरनारयण तथा हमारे बारे में भेद मत समझना ब्रह्मधाम के निवासी भी यही है। (व.अ.-६) श्री नारायणदेव की विशेष महिमा समजने के लिये श्रीहरि के छठवे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लिखित ''वचनामृत में श्री नरनारायणदेव'' नाम की पुस्तिका सभी अवश्य पढे।

सत्संगिजीवन ग्रंथ के प्रथम प्रकरण में शतानंद मुनि जब बदरिका आश्रम में आते है। तब स्वयं नारायण भगवान मुनि के प्रति बोलते है। वर्तमान में धर्मदेव तथा उनकी पत्नी भक्ति देवी में प्रगट होकर ''हरि'' नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की है। यही नारायण भगवान धर्मदेव से भी कहते है कि आप का पुत्र बनकर में हरिनाम वाला साधु पुरुषो का पालन करुगा तथा सभी जगह से अधर्म का नाम करेगा। अध्याय-२० में कहते है कि इसके बाद दो रुपो में भगवान (नरनारायण) स्वेच्छा से एक मूर्ति स्वरुप होकर धर्मदेव के हृदय कलम में (श्रीहरि स्वरुप मे) प्रगट होगे। अ.-७ में दुर्वासा मुनि धर्मदेव के प्रति कहते है। हे धर्म ! मनुष्य जन्म में भी यह मूर्ति आप की पत्नी होगी। फिर से यही नारायण भगवान आप के पुत्र होगे। अ.-२२ में प्रागट्य के समय श्रीहरिने भक्ति माता को अक्षरधामवासी और बदरिवासी ऐसे दो रुपो का दर्शन देकर भक्ति माता से बोले कि है भक्ति ! आप को मेरे दोनो रुपो में अंतर नही करना है। भक्ति माता भी श्रीहरि से कहती है। पृथ्वी पर समस्त प्राणीयो के कल्याण अर्थ में अवतार धारण किये। आप को मै साक्षात् प्रभु नारायण ऋषि के रुप में जानती हूँ। स.जी.प्र.-४ अ.-४६ में श्रीहरि कहते है। पुरुषोत्तम कृष्ण हमारे आराध्यदेव है। ये भगवान गोलोक में तेजो मंडल के मध्य में रहे है। वही भगवान प्राणीयो के कल्याण के लिये पृथ्वी पर आये है। धर्मदेव और मूर्तिदेवी अत्यंत दृढ भक्ति से ध्यान करके श्रीकृष्ण भक्ति धर्म के अंश में दो रुप वाले वर्णीवेश को धारण करके (नारायण और नर) बने है। नरनारयण नाम वाले श्रीकृष्ण, मूर्ति और धर्म से इंछित वरदान से संतोष प्राप्त करके मनुष्यो के कल्याण हेतु बदरिकाश्रम आये। कर्म भूमि रुप में इस भरतखंड में उनके शरण में आये। मनुष्यो के भक्ति और मुक्ति के लिये तपस्या करते भगवान बदरीवन में विराजमान है। हे मनुष्यो ! पृथ्वी का भार हल्का करने के लिये ब्रह्मादि देव प्रार्थना किये कि इस पृथ्वी पर यदु और कुरुवंश में कृष्ण और अर्जुन पैदा हुए थे। वही नरनारायण मैं श्री नगर में स्थापना किया हूँ। इस श्री नरनारायणदेव की प्रेमपूर्वक सेवा करने से मनुष्यो का अधिक कल्याण होगा। जो लोग प्रतिदिन दर्शन करेगे। वे इच्छित फल प्राप्त करेगे। उसमें संशय नही है। श्रीनरनारायणदेव की श्रध्धापूवक सेवा करने पर पुत्राथी पुत्र, धनार्थी धन, विद्यार्थी विद्या और कामुक व्यक्ति काम को प्राप्त करेगा। यह निश्चित है। श्री नरनारायण आराधना से सभी इच्छाये पूर्ण होगी। निष्कामी व्यक्ति श्री नरनारायण की सेवा से भवसागर तैर कर ब्रह्मधाम को प्राप्त होगा। प्र.प.अ.-६७ मे श्रीहरि कहते है। हे भक्तो ! प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण में और नरनारायणादि मूर्तियो में तनिक भी अंतर आप नही माने।

भक्तचिंतामणी ग्रंथ में प्र-६ में ऋषि मुनियो ने बदरिकाश्रम में ऋषि स्वरुप में स्थित श्री नरनारायण भगवान की स्तुति करके वैराग्य मूर्ति और निष्कुलानंद मुनि स्वयं के लेखनी से लिखते है कि -

जय अक्षरधामी अकामी,
जय सर्व तणा तमे स्वामी ॥१॥
जय अवतारना अवतारी,

मत्स्य कच्छ वाराह मुरारी ॥
जय नृहरि वामन नाथ,
जय परशुराम रघुनाथ ॥१०॥
जय हलधर कृष्ण कृपालु,
जय बुध्ध कलकी दयाळु ॥
जय अलेरवधर अवतार,
जय अकळ सर्व आधार ॥११॥
एवां अनेक धरी शरीर,
बेसो बद्रितले बेउ वीर ॥
रहो तापंस वेषे हमेश,
जटा मुकुट सुंदर शीश ॥१२॥
श्री नारायण कृपाए करी,
वृत्ति अंतरमांहि उतरी ॥१९॥
दिठु अक्षरधाम अलोकी,
पाम्या सुरव तेहने विलोकी ॥
दिठो तेजतणो त्यां अंबार,
तेह मध्ये सिंहासन सार ॥२०॥
तियां बेठा दीठा बहुनामी,
जेह अक्षरधामना धामी ॥
अति सुंदर मूरति सारी,
शोभाधाम श्याम सुरवकारी ॥२१॥
तेने निरखीने पाम्या आनंद,
फुल्या जेम कुमोदनी चंद ॥
पछी बारे जोयु आवी ज्यारे,
दीठी तेनी ते मूरति त्यारे ॥२२॥
जेवा अक्षरधाममां दिठा,
तेवा दिठा सनमुरव बेठा ॥
ते तो नारायणनुं छे कृत्य,
एमां नहि कांई अचरत्व ॥२३॥

हम लोगो के लिये सर्वप्रथम श्री नरनारायण भगवान जैसे भी है उन्हे जानकर सेवा पूजा स्तुति करेगे तो नरनारायण भगवान की कृपा से अंतकाल में अक्षरधामाधिपति पुरुषोत्तम नारायण आराध्य भगवान श्री स्वामिनारायण का दर्शन प्राप्त करेगे । इस लिये हमारे आराध्यदेव अ.प्र.प्र. ४८ में हरिभक्त मात्र को आज्ञा दिये है कि श्री नरनारायण की मूर्ति कागज में लिख देगे । उसकी पूजा करे । यह पूजा सभी शास्त्रा का प्रमाण है । इस लिये हरिभक्त प्रातः काल स्नान करके श्री नरनारायण की पूजा करे । सार यह है कि सत्संगी मात्र पूजा की पेटी में सहजानंद स्वामी के रुप में साथ ही साथ श्री नरनारायण का स्वरुप अवश्य होना चाहिए । अन्यथा वह पूजा अपूर्ण होती है ।

विमुख पंथियो तो दूर रहे । लेकिन कुछ, लोग मूल सम्प्रदाय में जाने-जाने वाले कई त्यागी अपने मन से बचनामृत में प्रकाशित नरनारायण के स्थान पर भगवान के स्थान पर अन्य नाम जोडकर आराध्य भगवान श्रीहरि तथा वचनामृत संग्रह कर्ता पाँच बड़े सद्‌गुरु नंद संतो को तथा प्रगट भगवान श्री नरनारायण की तथा श्रीनरनारायण देव पीठाधिपति श्रीहरि के अपर रुप धर्मवंशी आचार्यश्री से बडा द्रोह किये है । आराध्यदेव के वचनो से जो हो वही उपासना सर्वोपरि है । धरमधुरंधर के बचनो में जिन्हे श्रद्धा और विश्वास है । उनका धर्म दिन दहाडे समाप्त होता है । शेष अभी तक जिन्होने आज तक श्री नरनारायणदेव को कम आकने का प्रयास किया है । वह समय की धारा में धर्मभ्रष्ट होकर नाम शेष रह गये है । वह आप सभी जानते है । इस लिये आत्म मंथन करना चाहिए । श्रीजी महाराज के द्वारा स्थापित मूर्तियो में कोई भेद नही है । जो अन्तर करता है । वह नरक भोगता है । श्रीहरि के जो वचन है । उसी प्रकार स्वीकार करने पर श्रीहरि खुश होते है । अपनी बुद्धि की चपलता के कारण मिलते शब्दो को जोड देने से हजारो पाठक भ्रमित हो जाते है । इसका पाप उस व्यक्ति को मिलता है । आराध्य देव नाराज हो जाते है । इस तरह कितनी भी भक्ति करे । बुद्धि मे अंधकार आ जाता है ।

पर्व में तन, मन, धन से सेवा करके श्रीहरि को खुश कर ले । सभी शास्त्रो एवम् नंद संतो का एक ही मत है कि जो भगवान श्री नरनारायण हम लोगो को मिले है । वही अपने आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण है । और वही भगवान सर्वावतारी सर्वोपरि और अक्षरधामाधिपति है । इस लिये विवाद रहित होकर । भगवान श्री स्वामनारायण और धर्मवंशी आचार्यश्री को आराध्यदेव के स्वरुपो में प्रगट भाव रखकर वर्तमान समय में भगवान के दिव्य, सुख का लाभ लेना सीखे । इस पृथ्वी के मध्य भरतखंड में इस गुजरात की धरती इतनी भाग्यशाली है कि यहाँ पर एक नही नव-नव महा मंदिरो को स्वयं भगवानने भगवान को विराजमान किये है । इसका गर्व रखकर पर्व को सम्पूर्ण रुप से मनाये ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

कोरोना केस घटने की राहत और तीसरी लहर की आसंका के बीच अपना मंदिर और म्युजियम सभी खुलने लगे है। म्यूजियम में धीरे धीरे आने लगे है। म्यूजियम में लगाये गये वृक्ष और पौधो से प्रकृति खिल गयी है। श्रीजी प्रसादी की वस्तुए और प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रत्यक्ष उपस्थिति में दर्शनार्थीयो को दिव्य वातावरण का अनुभव हुए विना नही रहता है। यह बात अलग है कि की लोगो के कोने मे लगाया गया। **'Divine Vibes Zone'** बोर्ड पढने के बाद विश्व वातावरण का अनुभव होता है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

अेप्रिल-२०२१

दि. ०४-०४-२०२१ श्री प्रकाशभाई मनुभाई भावसार - साबरमती।

जून-२०२१

दि. १७-०६-२०२१ एक हरिभक्त - अहमदाबाद।

दि. २७-०६-२०२१ श्री कांतिभाई मोहनभाई पटेल - पादरा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि- जून-२०२१

रु।. २,५०,०००/-	श्री एक हरिभक्त - मेहसाना।
रु।. १,७५,०००/-	प.भ. श्री धीरजभाई टी. सोनी (जज साहब) नाराणपुराधाम - अहमदाबाद
रु।. १,००,०००/-	प.भ. श्री चुनीलाल दुर्लभजी सोनी - राणीप
रु।. ७६,०००/-	श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की खुशी हेतु एक हरिभक्त की ओर से - मेहसाना।
रु।. ७५,०००/-	पूज्य निहारिकाकुँवरबा द्विवेदी (बिन्दुराजा) - ह. श्री सौम्यकुमार तथा श्री सुव्रतकुमार - न्युजर्सी।
रु।. ६७,०००/-	श्री एक सत्संगी हरिभक्त - प.पू. बड़े महाराजश्री के ७७ वे जन्मदिन के अवसर पर।
रु।. ५१,०००/-	प.भ. श्री प्रकाशभाई मनुभाई भावसार - साबरमती।
रु।. ५१,०००/-	श्री मनीष इन्टरप्राईज - बावला।
रु।. ५१,०००/-	प.भ.श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल - माणसा - प.पू. बड़े महाराजश्री के ७७ वे जन्मोत्सव के अवसर पर।
रु।. ५१,०००/-	श्रीमती विमलाबेन डाह्याभाई पटेल - माणसा - प.पू. बड़े महाराजश्री के ७७ वे जन्मोत्सव के अवसर पर।
रु।. ५१,०००/-	प.भ. डॉ. गंगारामभाई त्रिभोवनदास पटेल - अहमदाबाद।

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "हमारी इच्छा वगैर किसी की नैया पार नही होती"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

कभी विचार किये है कि अपने जीवन में अचानक ऐसा हो जाता है। जिसका आयोजन नही होता है। विना परिश्रम के कुछ कार्य हो जाते है। कभी ऐसा होता है कि हम किसी व्यक्ति के उपर विश्वास करते है। तो वह हमें धोखा दे देता है। कई बार ऐसा होता है कि किसी कार्य के लिये अथक प्रयास करते है फिर भी कार्य नही पूर्ण होता है। ये लगभग सभी के जीवन में घटित होता है। यह पढे भी है। और सुनते भी है। सबकुछ भगवान के मर्जी अनुसार ही होता है। यदि सब भगवान के ईच्छानुसार ही होता है। तो सब कुछ अच्छा होना चाहिए। यह बडी बात है। क्योंकि ? एक माँ के रुप में बच्चे-बच्चियो के लिये जो करते है वह सही और सत्य करते है ? इस लिये भगवान हमारे माता-पिता है। इस लिये भगवान हमेशा अच्छा ही करते है। क्या संसार में सब कुछ खराब ही है। उसमें महाराज की ईच्छा होती है। महाराज ने शुद्धत कहे है। जितनी आज्ञा का पालन करेगे उतना 'सुख' जितना आज्ञा का लोपन करे गे उतना 'दुःख' प्राप्त होगा। लेकिन हम लोग क्या करते है कि कुछ खराब होने पर भगवान पर छोड देते है कि महाराज की ईच्छा ऐसी ही रही होगी। अथवा सामने वाले व्यक्ति पर रख देते है। कि उसके ऐसे करने से ऐसा हो गया। यह अज्ञान ज्ञान है। संयोग के दबाव के कारण मनुष्य स्व-स्वभाव में नही रह पाता है। उसे व्यवहार ज्ञान पैदा हो जाता है। परिणाम स्वरुप समझ नही रख पाते है। तो शुद्ध ज्ञान क्या है ? सत्य वस्तु क्या है ? ज्ञान-अज्ञान के आधार पर महारजाने कहा है : हमारी इच्छा के बगैर कोई भी कुछ नही कर सकता है। इसका गलत अर्थ लगाकर महारजा के उपर आरोप लगा देते है। वास्तव में हमारी ईच्छा के कोई कुछ नही कर सकता है। अर्थात् महाराज कहना चाहते है कि ''संसार पूरा न्याय का स्वरुप है'' अर्थात् इनकी यह सृष्टि है। इनकी रचना ऐसी है प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मो के आधार पर फल मिलते है। अर्थात कोई को किसी का सहन करना पडता है। उसे ऐसा लगता है कि हमारे साथ अन्याय कर रहे है। लेकिन सृष्टि में किसी के साथ अन्याय नहीं होता है। अन्याय होता है तो वह हमारे ज्ञान-अज्ञान के कारण होता है। मेरे साथ अन्याय हो रहा है। वास्तव में परमात्मा सभी के साथ न्याय करते है। हम जो कुकर्म कृदृष्टि तथा कुविचार करते है। इस लिये पुरुषार्थ में कमजोर पड जाते है। महाराज की इच्छा से नही होती है। हमारी बुद्धि विपरीत हो जाती है। हमे अपना भाग्य कैसे बनाना है। या बदलना है। वह हमारे हाथ में होता है। हम जैसा कर्म करते है वैसे ही हमारा भाग्य बदलता है। हमारे जीवन को कुछ खराब होता है। वह क्यो होता है ? अपने कर्मो से हम अपना भाग्य खराब करते है।

हम लोग जानते भी है। और मानते भी है कि सब कुछ भगवान के ईच्छा से होता है। लेकिन कोई कह दे। लाईय आप के हाथ की रेखा देखकर भाग्य का कथन करते है। तो उसके सामने हम लोग अपना हाथ फैला देते है। हाथ को देखकर कोई कहे यह वर्ष आप के लिये शुभ नही रहेगा। तो पूरा वर्ष उसी तरह से बीत जाता है। हमे जो सुख मिला है। उसे हम भोग नही सकते है। वह वर्ष अटकलो में बीत जाता है। और कोई ऐसा कह दे कि आप के लिये यह वर्ष सुखदायक रहेगा। उसी

समय सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। तो वह वर्ष सरलता से समाप्त हो जाते है । उसे व्यवहारिक अज्ञान वाला ज्ञान कहते है । इस लिये अपने स्वभाव में नही रह पाते है। लोक संज्ञा से प्राप्त ज्ञान यह व्यवाहरिक ज्ञान होता है । और ज्ञानी संज्ञा से प्राप्त ज्ञान हमारे स्व-स्वभाव में लाने का कार्य करता है । स्वस्वभाव अर्थात् आत्मा का स्वभाव सतचित आनंद यह परमानंद में नही हर सकता है। इस लिये महाराज की आज्ञा के पालन में कमजोर हो जाते है । पुरुषार्थ कम जोर पड जाता है . इस लिये गलत हो जाता है। हमारे जीवन में कुछ ऐसा घट जाता है। तो बाद में कहते है कि । महाराजने कहा कि हमारी इच्छा के विना कुछ भी नही हो सकता है। यह अपनी कमजोरी है। हम से जो कुछ भी गलत होता है । अथवा बाहरी संसार में जो गलत होता है। यह महाराज की इच्छा नही बल्कि अपने-अपने कर्म होते है। महाराज की ईच्छा का अर्थ यह है कि जो भी कृत्य करे । भगवान को साथ में रखकर करे । भगवान की प्रार्थना कसी पडती है।शक्ति माँगना पडता है ।यह कार्य करने के लिये हमें शक्ति प्रदान करे ।इस प्रकार महाराज को साथ रखकर कर्म करने पर उनकी आज्ञा का पालन हो जाता है।और खराब कृत्य नही हो पाता है।जैसे विद्यालय में अपने बच्चो को जो गृह कार्य मिलता है। उसे अपने पूर्णन करके बच्चे को प्रोत्साहन देते है कि हम आप के साथ है । मैं गलती होने पर अवगत करुगा । उसे तुम सुधार कर लिख देना ।इसी प्रकार भगवान भी हमारे साथ होते है। इसके लिये कर्म तो हमें ही करना चाहिए। जीवन में अग्रसर होना है तो पुरुषार्थ स्वयं करना चाहिए । इस लिये भगवान को साथ रखकर पुरुषार्थ करना चाहिए । तो हमे को साथ में रखकर बडे लोगो की आशीर्वाद लेकर करे तो महाराज ने वचनामृत में कहते है कि हमारे खराब प्रारब्ध भी बदल जाते है।हमारे पुरुषार्थ का भाग्य कैसा है । हमारे भीतर मुमुक्षुत्व कैसा उत्पन्न हुआ है । उस पर निर्भर करता है। हमे लगातार ध्यान देना है। हमे मोक्ष के मार्ग पर चलना है । महाराजने मोक्ष का रास्ता सुगम और सरस बताये है । तो हमेशा महाराज की आज्ञा में रहकर आगे बढते रहना है । यहि हम आज्ञा का उल्लंधन करेगे तो यह हमारी जिम्मेदारी होगी । हमे अपना भाग्य सुधारना है या खराब करना है। यह हमारे बस की बात है। महाराजने हमको स्वतंत्र शक्ति प्रदान किये है। हम उसका दुरुपयोग करके महाराज के उपर या सामने वाले व्यक्ति के उपर थोप दे तो यह मान्य नही है । परिश्रम करने पर महाराज प्रदान करते है। अत्यंत सावधानी पूर्वक चलना है । मोक्ष के मार्ग में सहज कच्चे पडेगे तो कही पर लटक जायेगे । इस बात का ज्ञान भी नही हो पायेगा । कोई भी कार्य करे । उसे अहंकार से दूर रखे । अहंकार और गर्व में अन्तर होता है । अहंकार अर्थात् हम जो है । उससे अधिक अपने को समझना होता है। गर्व अर्थात् जो हमारे पास है। हम लोग नरनारायणदेव के आश्रित है । हमें 'नरनारायणदेव' की छत्र छाया प्राप्त है । जिसका हमें गौरव है। उसे गर्व कहते है। लेकिन उसके द्वारा जो आता है ।उसे अहंकार कहते है। दोनो के मध्य एक महीन रेखा है। अहंकार अर्थात् दूसरे से अधिक महान समझना है । धन-दौलत हमसे जिसके पास कम है। उस कारण से उस व्यक्ति का सन्मान नही करे तो वह अहंकार होता है। किसी वस्तुक ा गर्व अहंकार में कब बदल जाता है। उसका हमें ध्यान नही रहता है । महाराज की महिमा जिसे १००% समझ में आ जाती है । उसके अंदर अहंकार झूक नही सकता है । जो व्यक्ति अहंकार से भक्ति करता है। वह मूर्ख होता है। वह व्यक्ति अपनी भूल तथा अवगुणो को नही देख पाता है । अहंकार कैसे समाप्त हो ? आत्मदर्शन कैसे हो ? आत्मा को स्वभाविक गुण क्या है ? मान और ईर्ष्या कैसे टाल सकते है। सत्य अहंकार रहित भक्ति कैसे कर सकते है ? यह सब महाराज लोया के १६ में पंचाला-३२१ और वडताल के ११ वें वचनामृत में कहे है। उसे समझ लेना चाहिए। और महाराज से प्रार्थना करना चाहिए। कि मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं जीवन के अनुकुल अवसर प्राप्त करु । मैं केवल मोक्षमार्गी बनू। महाराज आप सभी को खूब-खूब शक्ति दे। यही महाराज के चरणो में प्रार्थना करते है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवो का चंदन के परिधान का दर्शन

विश्व का सर्व प्रथम महामंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में वैशाख सुद-३ तीज से प्रारम्भ होकर ज्येष्ठ सुद-१५ तक ठाकुरजी का अलौकिक चंदन का परिधान पहनाकर दर्शन कराया गया । परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान और बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पूजारी ब्रह्मचारी संत प्रतिदिन चंदन के अलौकिक परिधान में सभी को दर्शन करवाते थे । असहनीय गर्मी में ठाकुरजी को सुंदर मलया गीर के परिधान द्वारा शीतलता का सुंदर वातावरण मिला था । कई भावुक श्रद्धालु भक्त यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये थे । ज्येष्ठ वद-१ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान का केशर स्नान विधिवत रुप से किया गया था । जिस का दर्शन करके संत-हरिभक्त धन्यता का अनुभव किये ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - ISSO 'सेवा' द्वारा निःशुल्क आक्सीजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के प्रेरणा और नेतृत्व में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर तथा आई.एस.एस.ओ. द्वारा 'सेवा' द्वारा कोरोना काल में दूसरे लहर में जब आक्सीजन की कमी से रोगी श्वास लेने में तडप रहे थे । वैसे समय में श्रीहरि के दयालु स्वभाव वाले गुण ''किसी को दुखी देखकर अपनी दया रुकती नही है ।'' वही स्वभाव उनके पुत्र धर्मकुल परिवार में सभी को दिखाई देता है । इसी क्रम में संकट के समय में ६० आक्सीजन कोन्सन्ट्रेटर मशीन डोनेट की गई थी । उसमें भूज स्वामिनारायण मंदिर जिस में ३० आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन, १० आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन सुधार सभा नवाब काबरो अजमेर, ५ आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन श्री आनंदबावा सेवा संस्थान जामनगर, ५ आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन भुरामुज के चेरिटेबल ट्रस्ट पोरबंदर, ५ आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन अविल सौराष्ट्र कच्छ रघुवीर सेना जुनागढ, ५ आक्सीजन कोन्सट्रेटर मशीन अखिल कालाबा होस्पिटल भरुच को डोनेट किया गया था । जिस में कई लोगो का जीवन बचाया गया । (आई.एस.एस.ओ. द्वारा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से.-२ में भव्य आमोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से और मंदिर के महंत स्वामी स.गु. पी.पी. स्वामी के दिव्य प्रेरणा से गांधीनगर से-२ मंदिर में बिराजमान देव के समक्ष ७०० किग्रा आम का दिव्य आमोत्सव मनाया गया था । हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए । (पूजारी स्वामी देवप्रकाशदास)

श्री नरनारायण भगवान के ३०० वे वर्ष में "पर्व" महोत्सव के निमित्त श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर में "वृक्षारोपण" कार्यक्रम

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तता भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा और आशीर्वाद से उनके अध्यक्ष पद पर मनाने वाले अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में बिराजमान श्री नरनारायण भगवान के २०० वे वर्ष ''पर्व'' के प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर से.-२ गांधीनगर में अनेक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

इस ''पर्व'' महोत्सव के अन्तरग्त निज मंदिर में सर्वोपरि सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु की अन्तर्ध्यान तिथि ज्येष्ठ वद-१० के दिन ''वृक्षारोपण'' कार्यक्रम का प्रबन्ध किया गया था । इसमें अनेक प्रकार के फूल के पौधे तथा वृक्ष जो लगभग ५० थे । उनका रोपण किया गया था ।

देवप्रकाश स्वामी द्वारा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया गया था । इस कार्यक्रम में कई हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे ।(बिपीन एम. पटेल - गांधीनगर)

श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर द्वारा टिफिन सेवा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर के व्यवस्थापक श्री स.गु. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के समय में लोगो के घर-घर जाकर प्रातः और शायं की टीफीन पहुचाये थे। जिससे लोगो की जठराग्नि शांत हुई। घर-घर तक टिफिन पहुंचाने की सेवा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कोटेश्वर के द्वारा की गई थी। इसी प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण अपने समय में सदाव्रत चलाये थे। उसकी झांकी का दृश्य इसमें दिखाई दे रहा था। लगभग १८००० जितनी टिफिन लोगो के घर पहुंचाई गयी थी।(महेन्द्र भगत - कोटेश्वर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आर.सी. टेक्निकल घाटलोडिया का चौथा वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से गांधीनगर (से-२) के महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर आर.सी.टेक्निकल घाटलोडिया का चौथा वार्षिक पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया। पाटोत्सव के अवसर पर महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और पूजारी स्वामी देवप्रकाशदासजीने सत्संग और कथा वार्ता का लाभ दिये। और श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' की विशेष जानकारी दिये।(कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतपुरा का दूसरा वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समस्त धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद तथा गांधीनगर (से-२) के महंत पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन और प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतपुरा का दूसरा वार्षिक पाटोत्सव अच्छे रुप से मनाया गया। इस अवसर पर शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी आकर सुंदर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिया। और श्री नरनारायणदेव (द्विशताब्दी) ''पर्व'' के अन्तर्गत कार्यक्रम की विशेष जानकारी दिये।(कोठारीश्री)

समौ गाँव के आंगन में आम्रोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा गांधीनगर से-२ मंदिर के महंत स्वामी पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के निमित्त २०० किग्रा आम से आम्रोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर स.गु. पी.पी. स्वामी और पूजारी स्वामी देवप्रकाशदासजी पधारे थे। ''पर्व'' के धार्मिक और सामाजिक कार्क्रम की क्रमानुसार सूचना दिये। (कोठारीश्री - समौ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकालोनी (बापूनगर)

श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से और उनकी उपस्थिति में ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २०-०६-२१ के दिन रात्रि में ९ से ११ बजे (२ घंटे) श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन गायी गई। पर्व के उपलक्ष्य में स्वामीने श्री नरनारायणदेव की महि प्रसंगोचित समझाये थे।

इसी दिन ज्येष्ठ सुद-१० को आराध्यदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की अन्तर्ध्यान तिथि होने के कारण बहनो के मंदिर में प्रातः ८ से १० (दो घंटे तक) श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गई थी।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

वडु (ता. कडी) गाँव में कोविड सेन्टर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव देश के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु द्वारा ट्रस्टीयो और ग्रामीणो द्वारा कोरोना के रोगियो के लिये कोविड सेन्टर श्री नरनारायण सत्संग समाज के वाडी में प्रारम्भ किया गया। जिस में आवश्यकतानुसार आक्सीजन के साथ व्यवस्था की गयी थी। कई कोरोना ग्रसित लोगो को निशुल्क सेवा दी गई। देश-परदेश में निवास करने वाले हरिभक्तो ने आर्थिक सहयोग दिये थे। इस प्रकार अपने कई मंदिरो में कोविड केन्द्र बनाया गया था।(प्रवीणभाई पटेल - वडुवाले)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क का ३३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३३ वाँ पाटोत्सव श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज

जीवराजपार्क के यजमान पद पर विधिवत मनाया गया । इसके अन्तर्गत बिराजमान हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक स.गु. पी.पी. स्वामी तथा देवप्रकाश स्वामी द्वारा की गई । और ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट रखा गया था । अन्नकूट के सभी प्रसाद और रस-पुरी शाक १००० जरुरतमंद व्यक्तियो को प्रसाद रुप में ''पर्व'' के उपलक्ष्य में बाँटा गया ।(कोठारीश्री जीवराजपार्क)

शीलज गाँव से कालुपुर पदयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी वरष के उपलक्ष्य में भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से अहमदाबाद के शीलज गाँव से प्रति पूर्णिमा को कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायण के दर्श; हेतु पदयात्रा का आयोजन स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) ने प्रेरित किया है । जो हरिभक्त जुडने की इच्छा रखते हो वे श्री हितेन्द्रभाई पटेल मो. नं. ९८७९८५३८१० पर सम्पर्क कर सकते है ।(रुद्र पटेल)

धरमपुर भूंडिया में "पर्व" के निमित्त धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव के द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के उपलक्ष्य में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रई के आज्ञानुसार श्री स्वामिनारायण महामंत्र के धुन का प्रारम्भ एकादशी को स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेस्त्ररणा से किया गया था । दोनो एकादशी को रात में ८ से ९ बजे कि श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन गाँळ के लोगो ने किया था । गाँधीनगर से आये स.गु. पी.पी. स्वामी और देवप्रकाश स्वामी द्वारा कथा-सत्संग का लाभ दिया गया था ।(कोठारीश्री धरमपुर - भूंडिया)

"पर्व" महामहोत्व के उपलक्ष्य में झुम मीटींग से कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से हमारे आगामी श्री नरनारायण भगवान के २०० वें पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में वडू (ता. कडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा **Zoom Meeting** द्वारा प्रति गुरुवार को सत्संग सभा होती है । जिस में देश-विदेश के हरिभक्त भाग लेते है । जिसमें श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून श्री नरनारायण अष्टक, नंद संतो द्वारा रचित भक्ति-किर्तन अपने भक्तो द्वारा अंत में ठाकुरजी के आरती की जाती है ।

समय प्रति गुरुवार को प्रातः ८-३० से १०-३० तक इस्टर्न टाईम अमेरिका, केनेडा, भारतीय समयानुसार प्रति शुक्रवार प्रातः ६ से ८ बजे, वक्ता : पू. विद्वान संतो द्वारा संत समागम ९-४५ बजे, आयोजन श्री नरनारायणदेव सत्संग समाज वडु (प्रवीणभाई - वडु)

मोटप श्री स्वामिनारायण मंदिर में "पर्व" महामहोत्व के उपलक्ष्य में अखंड महामंत्र धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से आगामी श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप गाँव में ता. १७-६-२०२१ की प्रतिदिन २०० घंटे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की सुंदर आयोजन हुआ ता । जिस में मोटप गांव के सभी हरिभक्त से लेकर छोटे बच्चे, युनक, और गांव के वृद्ध हरिभक्त भी अधिक भाव-प्रेम श्रध्धा से भगवान के नाम का अकंड जप करके भाग्यशाली बने । धुन की पूर्णाहुति के अवसर पर मेहसाना अपने मंदिर के महंत स्वामी स.गु. नारायणप्रसाददासजी संत-मंडल के साथ पधारे थे । मू.अ.मू. सदगुरु पूज्य गोपालानंद स्वामी द्वारा पूजित लालजी महाराज की आरती उतारकर २०० घंटे तक धुन की पूर्णाहुति की गई थी ।(अशोकभाई पटेल - स्वा. मंदिर मोटप)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

हरिकृष्णधाम रणजीतगठ (हलवद)

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से पूज्य बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प के साथ उसी प्रकार प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद से मनाया जाने वाला श्री नरनारायण भगवान के ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में रणजीतगढ हरिकृष्ण धाम मंदिर के महंत श्री भक्तिहरिदासजी स्वामी तथा उनेक शिष्य मंडल द्वारा हलवद के अगल-बगल के गाँवो में गरीब लोगो के लिये ५०० जोडी चप्पल का वितरण किया गया था । और ध्रांगध्रा के अगल-बगल के गाँवो में चप्पल का वितरण किया गया था । इस प्रकार लोक कल्याणकारी सुंदर क्रियाकलाप ''पर्व'' के निमित्त किया गया ।(अनिल बी. दूधरेजिया)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

वैशाख सुद-१ अ.नि.प.भ. हीरजीभाई लालजीभाई पटेल - देवपुरा । **वैशाख सुद-२** अ.नि.प.भ. धनजीभाई रायमलभाई हेरमा - रतनपर, अ.नि.प.भ. मनुभाई जे. सुहागिया - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. कोकिलाबेन रमेशचंद्र शाह - अहमदाबाद, प.भ. कनुभाई हरिभाई बेकरिया - अहमदाबाद, प.भ. प.भ. कीरीटभाई भगवानदास सोनी - लंदन, प.भ. दिपिकाबेन पाण्ड्य - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-३** अ.नि.प.भ. धर्मेन्द्र वसंतराम पडिया - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. बीनाबेन नीरवभाई धोलकिया - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. चंद्रकांत छबीलदास शाह - अहमदाबाद, प.भ. प्रभुदास चिमनभाई पटेल - अहमदाबाद, प.भ. मैत्रीबेन हितेषभाई पेटल - अहमदाबाद, प.भ. जौविकभाई विपीनभाई बलर - भावनगर, प.भ. विमलभाई कांतिभाई सोनी - अहमदाबाद, प.भ. जीगरकुमार अशोकभाई पटेल - वर्जीनिया । **वैशाख सुद-४** प.भ. सुरजबेन मफतलाल पटेल - झूंडाल । **वैशाख सुद-५** प.भ. शैलेषभाई भावसार हरिॐ परिवार - अमहादाबाद, प.भ. मधुबेन ईश्वरभाई पटेल - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-६** अ.नि.प.भ. रामजीभाई मेघजीभाई - नडियाद । **वैशाख सुद-७** प.भ. रंगाणी स्नेहलकुमार रमेशभाई - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-९** अ.नि.प.भ. पटेल रमणभाई बेचरदास - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-१०** प.भ. जीतभाई पूजारा साहब - अहमदाबाद, प.भ. शारदाबेन अमरतभाी पेटल - राजपुर, अ.नि.प.भ. लालजीभाई धनजीभाई केराई - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-११/१२** अ.नि.प.भ. चंद्रिकाबेन भीखाभाई भावसार - अहमदाबाद **वैशाख सुद-१३** प.भ. रसिकभाई शंकरदास पटेल - मोखासण, अ.नि.पू.स.गु. स्वामी निर्गुणदासजी के पुण्यतिथिपर - SGVP गुरुकुल, प.भ. प्रदीपभाई चतुरभाई पटेल - गवाडा, प.भ. ईश्वरभाई एम. पटेल - वडोदरा, अ.नि.प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल - गांधीनगर, प.भ. रेखाबेन प्रविणभाई नसीत - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. वालभाई वाघानी हीराणी - मिरजापुर-कच्छ, अ.नि.प.भ. हिराबेन कांतिलाल पटेल - गणेशपुरा, एच. के. ब सर्विस प.भ. हरुभाई पेटल - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. हिराबेन वेलजीभाई - टेन्ट । **वैशाख सुद-१४** प.भ. मंजुलाबेन इंदूभाई पटेल - अहमदाबाद, प.भ. मुकुंदभाई त्रिभोवनभाई मिस्त्री - अहमदाबाद, श्री गोपीनाथजी एजन्सी - अहमदाबाद । **वैशाख सुद-१५** प.भ. ओधवजीभाई रणछोडभाई कैला - अहमदाबाद, प.भ. अक्षर स्मित पटेल - धमासणा, सांख्ययोगीबा श्री राजकुंवरबा तथा सां. उषाबा - हवेली-मोरबी, अ.नि.प.भ. चिमनभाई केशवलाल पटेल - अहमदाबाद ।

वैशाख वद-१ प.भ. पंकजभाई गांडाभाई पटेल - अहमदाबाद, प.भ. निल सोनी - अहमदाबाद, प.भ. प्रिसाबेन सचिनभाई पटेल - सांकापुरा, प.भ. भगवतीबेन विठ्ठलभाई - अहमदाबाद । **वैशाख वद-२** अ.नि.प.भ. नरोतमभाई रतनजीभाई पटेल - सुरत, प.भ. प्रफुलभाई पटेल - सूकाटींबा । **वैशाख वद-३/४** प.भ. शामजी कुंवरजी राबडिया - लंदन, अ.नि.प.भ. प्रेमिलाबेन घनश्यामभाई - बालासिनोर । **वैशाख वद-५** प.भ. जय राजेशभाई शाह - बोटाद, प.भ. बंसीभाई पटेल - गामडी, प.भ. रुद्र निखिलभाई पटेल - मरतोली, प.भ. जय मनोजभाई ब्रह्मभट्ट - अहमदाबाद, प.भ. शांताबेन अंबालाल पटेल - करजीसण । **वैशाख वद-६** अ.नि.प.भ. अमृताबेन छगनभाई कनाणी - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. दर्शनभाी संतभाई महेता - अहमदाबाद, प.भ. जय राजेन्द्रभाई गज्जर - अहमदाबाद, प.भ. देवेन्द्रभाई झवेरभाई पण्ड्या - अहमदाबाद । **वैशाख वद-७** प.भ. गंगाबेन बेचरभाई लालभाई पटेल - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. खीमजीभाई नारणभाई राबडिया - रामपर-कच्छ, साँख्ययोगीबाश्री राजकुंवरबा, सांयो. उषाबा - मोरबी । **वैशाख वद-८** अ.नि.प.भ. मंगुबेन प्रहलादभाई पटेल - भावपुरा । **वैशाख वद-९** अ.नि.प.भ. रमणभाई जोईतारामभाई पटेल - वडु, अ.नि.प.भ. हिरजी शामजी वेकरिया - रामपर-वेकरा-कच्छ, प.भ. मावजी हरजी राबडिया - नागरपर-कच्छ । **वैशाख वद-१०** अ.नि.प.भ. दिपकभाई भगवतीप्रसाद त्रिवेदी - नागलपर-कच्छ, प.भ. मूलजी मावजी राबडिया - नागरपर-कच्छ । **वैशाख वद-११** प.भ. महेशभाई आशाभी पटेल - अहमदाबाद, प.भ. गीताबेन नवीनभाई पटेल - पोर, अ.नि.प.भ. भास्करभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट - अहमदाबाद, प.भ. मिलिंदभाई शाह - अहमदाबाद, प.भ. विद्याबेन चिमनलाल - नारणपुरा, अ.नि.प.भ. कमलेशभाई नाराणदास पटेल - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. देवुभगत जयसियाराम - राणाकंडोरणा, अ.नि.प.भ. भीखालाल अंबालाल भावसार - अहमदाबाद । **वैशाख वद-१२** अ.नि.प.भ. अनिलभाई लालजी पटेल - मुंबई, अ.नि.प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल - गांधीनगर, अ.नि.प.भ. देवु भगत जयसियाराम - राणाकंडोरणा, अ.नि.प.भ. कलावतीबेन मणीभाई झिंझुवाडीया - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. तेजबाई खीमजी छाबडिया - मांडवी-कच्छ, प.भ. रमेशभाई अंबालाल पटेल - अहमदाबाद, प.भ. हरेशकुमार मणीभाई पटेल - रडोदरा, प.भ. श्वेताबेन पी. दलाल - अहमदाबाद । **वैशाख वद-१३** अ.नि.प.भ. भीखाभाई गोविंदभाई परमार - अहमदाबाद, प.भ. परेशभाई बी. पटेल - गवाडा, अ.नि.प.भ. अशोकभाई मोहनभाई जीविया - धुडकोट-हालार । **वैशाख वद-१४** अ.नि.प.भ. नारणभाई देवसी वेकरिया - मांडवी-कच्छ । **वैशाख वद-३०** प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद पेटल - अहमदाबाद, अ.नि.प.भ. गौरीबेन प्रवीणभाई पटेल - भावनगर, प.भ. जगदीशचंद्र रतीलाल पटेल, अ.नि.प.भ. भरतभाई गंगदासभाई जागाणी - अहमदाबाद ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

लगभग १२२ वर्ष पहले भुज से आचार्य श्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज पर लिखा गया। इस पत्र में कोरनटाईन शब्द का प्रयोग किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि उस समय भी इसी तरह की महामारी का प्रकोप रहा होगा।

श्रीस્વામીનારાયણ ભગવાન સત્ય છે.

સ્વસ્તિ શ્રી અમદાવાદ માહાશુભ સ્થાને વીરાજમાન ઉતમોઉતમ પરમપુજ્ય ચરણકમલ પરમદયાલુ ધરમધુરંધર ધરમકુલતિલક ધરમકુલભૂષણ ધરમવંશ દિનમણી નિજાશ્રીત યથોક્ત સ્વધર્મ મર્યાદા સ્થાપન તતપર ગુરૂરાજ શ્રીમદ્ ભક્તિધરમનંદન ચરણાર્વિંદ લુબ્ધ માનસભૃંગ એકાંતિકધર્મ નિષ્ઠ એવીંગ અનેક સર્વે શુભ ઉપમાં લાયક આચાર્ય શ્રી ૧૦૮ પુરશોતમપ્રસાદજી મહારાજ શ્રીકેશવપ્રસાદજી માહારાજની પવિત્ર સેવામાં શ્રીભુજનગરથી લી. આપના દરશનનો અભીલાશી સાધુ અક્ષરજીવનદાસનાં ઘણા સ્નેહ પૂર્વક સાષ્ટાંગ દંડવૃત સહીત જય શ્રી સ્વામીનારાયણ વાંચશો – બાદ વીનતી સાથે લખવાનું કે આપનો ખુશાલી ભરેલો પત્ર આજરોજ આવ્યો તે વાંચી ઊર ચડાવ્યો. તેમાં આપે સતસંગ જીવનની પોથી મોકલ્યાની તાકીદ લખી તે વિશે લખવાનું કે આપશ્રી ના લખવાથી વાતે અમારી આંખ ઉગડે તેવી નથી કારણ કે પુસ્તક લેવા વખતે જેવી આતુરતા હોએ તેવી પોછો મોકલવા વખતે ન હોએ ને હાલે પુસ્તક ઘણા દહાડાથી પડ્યું છે. પરંતુ હું અમદાવાદ આવેલ ત્યારે આપણા માંથી કોઈ પણ એ પુસ્તક બાબત યાદાશ આપી નહીં. નહીતર પુસ્તક રા. ગીરજાશંકરભાઈ મુલજી સાથે મોકલી આપત. પણ તે બાબત વિશેષે માફ થાઈ અમારી છે.

હાલ આપના લખવા પ્રમાણે પુસ્તક મોકલવામાં હરકત ઘણી છે. કારણ કે હાલે આખરના દિવસ તેમ અમદાવાદ વીગેરેમાં કંઈક રોગ જેવું હોવાથી બારી ફેરરમાં દસ દિવસ કોરનટાઈનમાં રાખે છે. માટે હાલ પુસ્તક વિના ચાલે તેવું હોએ તો જન્માષ્ટમી ઉપર પોચતો કરી દેશી વળી પુસ્તક વગર ચાલે તેવું ના હોએ તો આપની આજ્ઞા પ્રમાણે વરતીએ તદોપરાંત આપને આજ્ઞા કરી એટલે અડચે વચને પણ પોચાડવો જોઈએ પણ વચન ઊલ્લાવવો ન જોઈએ પરંતુ હાલ નો વખત કઠણ છે. જેથી માવિત્ર જાણી અરજ કરીએ તે લક્ષમાં લઈ પુસ્તક વિના અટકી રહ્યુહોએ તો વલતો સમાચાર કૃપા કરી લખશો તો ગમે તે રીતે અડચણ ભોગવી મોકલી આપશું અત્રે સતસંગ પ્રકરણના પ્રકરણ-૨ છે ને માંહેલો પ્રકરણ કલી છે તે આપને સેજ જાણવા સારૂ લખ્યું છે. હાલ અત્રે માંડવી વીગેરે ગામડાઓમાં રોગની સાંન્તિ છે એજ વળતો પત્ર કામકાજ સેવાથાકરી ફરમાવશો. ત્યાં ધરમકુળ તથા સાધુ બ્રહ્મચારી પારશદ હજુરી કોઠારી કારભારી હરીભક્ત સર્વે ને ઘણા સ્નેહ પૂર્વ જય શ્રી સ્વામીનારાયણ કહેવરાવશો અત્રેથી સાધુ બ્રહ્મચારી પાળા હરીભક્ત કોઠારી આદી સર્વેના ઘણા કરી જય શ્રીસ્વામીનારાયણ વાંચશો. સં. ૧૯૫૬ ના વર્ષે વૈશાકવદ ૨ વારબુધ.

સાધુ પુરાણી ધરમજીવનદાસજીને જય શ્રી સ્વામીનારાયણ કેતાં તેઓ અત્રે ક્યારે આવશે તે લખાવશો. લી. હું છું. આપનો આજ્ઞાંકિત ચરણ સેવક નિર્ભયરામ પ્રાગજીના કોટાનકોટી દંડવૃત પૂર્વક જય શ્રીસ્વામીનારાયણ આપની પવિત્ર સેવામાં અંગીકારશો.

પુસ્તકની જરૂર હોતાં આપ મોકલાવું લખો તો મનુષ્ય સાથે મોકલવાની ઘણીક જાતની હરકત છે. વાસ્તે ટપાલ રસ્તે મોકલવામાં કાંઈ હરકત ન હોએ તો મોકલી આપીએ માટે તેવો જવાબ લખશો.

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान

श्री नरनारायण भगवान का २०० वर्ष

पर्व

२७ फरवरी से ५ मार्च २०२२

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये
ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाईट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।
http://www.swaminarayan.in/donation

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 * Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

Praful Kharsani